मज़दूर की साइकिल

डा0 वसीम सिद्दीक़ी
10/8th Road North
Ahmadi - 61008
Kuwait

उसने गुरबचन सिंह की दरवाज़े की कुन्डी खटखटाई आ गये मंगलू। उन्होने दरवाज़े पर खड़े हुये आदमी से कहा और कलाई पर बंधी घड़ी की तरफ देखा, सुबह के आठ बज रहे थे। मंगलू तुम्हारे पास तो घड़ी भी नहीं है तब भी तुम रोजाना ठीक वक़्त पर कैसे आ जाते हो। एक मिनट भी देर नहीं मंगलू जवाब देने के बजाये खुश होकर मुसकुरा दिये थे, मंगलू एक नौजवान मज़दूर था जो गुरबचन सिंह के यहाँ पिछले 15 दिन से मज़दूरी कर रहा था। सरदार जी अपने दो मन्ज़िला मकान को तीन मन्ज़िला करवा रहे थे। और मंगलू दिन भर बड़ी जफाकशी के साथ ईन्टें ढ़ोता रहता था। शाम को सरदार जी उसे रोज़ के रोज़ मज़दूरी 12 रूपये दे देते थे जिसे वह अपनी पसीने से भीगी जेब में रखकर अपने गाँव की तरफ़ रवाना हो जाता था। उस का गाँव शहर से 6 किलोमीटर दूरी पर था। सालों से वह गाँव से रोज़ शहर मज़दूरी करने आता था। हाथ पैर का अच्छा था इस लिये उसे कहीं न कहीं मज़दूरी मिल जाती थी। बहुत कम ऐसा होता था कि कभी उसे काम न मिला हो और उसे मायूस गाँव वापस लौट जाना पड़ा हो।

सुबह जब वह शहर आता था तो उस गाँव से शहर का 6 किलोमीटर का रास्ता पैदल तै करने में किसी परेशानी का एहसास नही होता था लेकिन शाम को जब दिन भर की जफाकशी के बाद पैदल गाँव लौटना पड़ता था तो उसे काफी थकावट हो जाती थी, उसके बाद वह सोचने लगा था कि किसी तरह से जल्द से जल्द वह साइकिल खरीद ले। और फिर वह अपनी 12 रूपये रोज़ की क़लील आमदनी में से कुछ न कुछ रूपया रोज़ साइकिल के लिये अलग से बचा कर रखने लगा, उसके बाद जब दिन भर का थका मांदा सोने के लिये लेटता था तो अकसर रात भर वह साइकिल के ख़्वाब देखता रहता था। कभी नई चमचमाती साइकिल पर बैठा उसे तेज़ी से दौड़ा रहा था या कभी साइकिल पर बैठा आसमान पर उड़ रहा था। अक्सर व बेशतर वह अपने टीन के बक्से में जमा हुये रूपये निकाल कर गिना करता था। कि अब उसे साइकिल के लिये कितना और जमा करना है। उस ने दोकान से मालूम कर रखा था कि साइकिल के दाम पूरे चार सौ रूपया थे। उस ने आज रूपया गिने पूरे 350 रू हो गये थे। ये पैसा जमा करने में उसे कितना अरसा लग गया था। उसे कुछ खुशी का एहसास हुआ। अब सिर्फ 50 रू की ज़रूरत थी जिसे वह तीन महीने के अन्दर तो जमा ही कर सकता है। उस का बहुत जल्द साइकिल का ख़्वाब एक हक़ीक़त में बदल जायेगा उस की ज़िन्दगी की सब से बड़ी आरज़ू पूरी हो जायेगी। शादी उस की बचपन में ही हो गई थी और उसकी बीवी उस के साथ फटे पुराने कपड़े पहन कर और रूखी सूखी खाकर बहुत मुतमइन थी, हो सकता है उस लिये वह मुतमइन हो कि उसे पता ही नहीं था कि अच्छा खाना या अच्छे कपड़े क्या होते हैं।

बहर हाल मंगलू जब भी शाम को मज़दूरी से वापस लौटाता तो उसे पका पकाया खाना मिलता था और उस की बीवी काफी देर तक उस का पैर भी दबाती थी। उसके बाद दोनों लेट कर

बातें करते करते एक दूसरे में गुम हो जाया करते थे। बाते क्या होती थीं जब वह साइकिल ख़रीद लेगा तो अपनी बीवी को बैठाकर शहर घुमाने ले जायेगा। और उसकी बीवी साइकिल पर बैठने के ख़्याल से खुशी से सरशार हो जाया करती थी, वह सोचती थी कि गाँव में उस का कितना मान बढ़ जायेगा, उसके पूरे गाँव में सिर्फ एक साइकिल है। मदन पटवारी के पास। उस की बीवी साइकिल पर बैठ कर कितनी अकड़ती फिरती है उस के पास साइकिल हो जायेगी। तो वह भी साइकिल पर बैठकर मदनपटवारी की बीवी का तरह अकड़ा करेगी। ये सोचकर वह अपनी गरदन काफी अकड़ा लेती थी। इस दौलत से भरी दुनिया में उसकी ख़्वाहिश की इन्तिहा सिर्फ यही थी। उस का पति बहुत अच्छा है। उसे मारता पीटता नहीं, खाने को रूखी सूखी ही मिल जाती है, कितनी हंसी खुशी से उसकी ज़िन्दगी बीत रही है बस साइकिल आ जाती तो मंगलू को आराम मिल जाता और वह भी उस पर बैठ कर मंगलू के साथ खूब घूमती। मंगलू उस का पति तो था ही लेकिन अच्दा दोस्त भी था, सारा बचपन और लड़कपन भी तो उस के साथ गुज़रा था। शुरू से आखिर तक वह सिर्फ मंगलू को जानती थी और अब मंगलू की तरह साइकिल उसके लिये भी मेराज थी।

आज जब दोनों मियाँ बीवी सोने लेटे तो दोनों ही के चेहरों पर तशवीश की लकीरें थीं। वजह ये थी कि आज जब वह अपने टीन के टूटे बक्से में से रूपये निकाल कर गिन रहे थे। तो उसी वक़्त गाँव का लड़का घनश्याम उनकी झोंपड़ी में आ गया था। और उसने उन को रूपये गिनते भी देख लिया था। धनश्याम वैसे तो काफी नौ उम्र लड़का था लेकिन बुरी सोहबत में पड़ गया था, कई छोटी मोटी चोरियों में उसकी पिटाई भी हुई थी। मंगलू को नींद बिलकुल नहीं आ रही थी और अब उसके सर और गरदन में भी दर्द होने लगा था क्योकि टीन के सख़्त बक्से के ऊपर वह अपना सर रखे हुये था, उसकी बीवी आखें बन्द किये पड़ी थी, पता नहीं सो रही थी कि जाग रही थी, और नींद जिसके बारे में मशहूर है कि फांसी के फन्दे पर भी आजाती है, पता नहीं किसी वक़्त मंगलू की आँख लग गई। सुबह वह जागा तो बक्स उसके सर के नीचे से गायब था। उस के पैरों से ज़मीन खिसक गई। वह तक़रीबन चीख मारकर खड़ा हो गया। राधा राधा वह हिस्ट्राई अंदाज़ में अपनी बीवी को पुकारने लगा। और फिर उसे जैसे एकदम इतमिनान नसीब हो गया। उसकी बीवी झोंपड़ी के एक कोने में उस टीन के बक्से पर औंधी पड़ी सो रही थी, उसने सोचा शायद रात भर जागी है तभी अभी तक सो रही है, उस ने आहिस्ता से बक्स उसके नीचे से निकाल कर उसे ठीक से लिटा दिया। उस की बीवी इतनी गहरी नींद सो रही थी कि इतना हिल्दे डुलने के बावजूद वह नींद से नहीं जागी। कई रोज़ गुज़र गये, अभी चार सौ रूपये नहीं जमा हो पाये थे। अलबत्ता उस पर और बीवी पर अब पसमुरदगी तारी हाने लगी थी। रात भर दोनों सोते जागते रहते थे, रूपयों की रखवाली ने उसकी रातों की नींद हराम कर रखी थी। मंगलू सोचता था कि किसी तरह से चार सौ रूपया जमा होजायेंगे ताकि वह उन रूपयों से नजात पा सके, जिस ने उस का और उस की पतनी का सुख चैन छीन रखा है।

आज मंगलू के पास पूरे चार सौ रूपया जमा हो चुके थे, उसने रूपया गिन कर अपनी धोती

में अड़स लिया फिर अपनी बीवी को देखने लगा। रूपयों की रखवाली के चक्कर में उसकी बीवी का शादाब खिला हुआ चेहरा किसी हद तक मुरझा सा गया था। उस ने सोचा कि जब वह आज साइकिल ले आये गा तो उसकी बीवी के चेहरे की सुर्खी फिर लौट आयेगी और इस ख़्याल से उस की रगों में खून की गर्दिश तेज़ होगई थी। उस ने अपनी नज़रें फिर अपनी बीवी के चेहरे पर डाल दी थीं, और आहिस्ता, आहिस्ता उस की तरफ बढ़ने लगा था, अरे, अरे उसकी बीवी ने काफी लज्जा कर उसे एक डान्ट पिलाई थी और उसे बाहर की तरफ ढकेल दिया था, वह किसी बच्चे की तरह उछलता कूदता शहर जाने वाली पगडन्डी की तरफ मुड़ गया था, उसकी बीवी झोपड़ी में वापस आगई थी, शाम हो गई थी उस ने लालटेन जलाई मंगलू के आने का वक़्त हो रहा था, वह झोंपड़ी के दरवाज़े पर आकर खड़ी हो गई, मंगलू अभी तक नहीं आया, रोज़ तो उस वक़्त आ जाता था, उसे तशवीश होने लगी थी, लेकिन आज तो उसे साइकिल खरीदनी थी, उसमें देर लग रही होगी, ये सोचकर उसे कुछ इतमिनान हुआ, झोंपड़ी के दरवाज़े पर खड़े खड़े जब वह काफी थक गई, दो चार मिनट के बाद वह फिर झोंपड़ी के बाहर निकल आई, और ये देखकर वह तक़रीबन खुशी से नांच उठी कि मंगलू नई चमचमाती साइकिल पर बैठा चला आ रहा है, वह झोंपड़ी के बाहर मंगलू से लपट गई, अरे अरे भीतर तो चल कोई देख लेगा, मंगलू साइकिल के साथ साथ उसे ढकेलता हुआ झोपड़ी के अन्दर ले आया, अब मंगलू और उसी बीवी दोनों साइकिल को मुहब्बत पाश नज़रों से देख रहे थे।

साइकिल चलाते हुये आये तब भी बड़ी देर कर दी, वह अब मंगलू से शिकायत कर रही थी, अरे सारे रास्ते थोड़ी चलाई, जहाँ जहाँ भीड़ होती थी साइकिल से उतर जाता था, अभी मंगलू को ठीक से साइकिल चलानी नहीं आती थी, अब ऐसा करेंगे अभी साइकिल शहर नहीं ले जाया करेंगे, पहले दो तीन दिन गावं में खूब चलालेंगे, उसके बाद फिर शहर उस पर जायेंगे, उसने अपनी बीवी से कहा, ठीक है पहले खूब चलाने में पक्के हो जाओ, फिर शहर ले जाना, उसकी बीवी ने जवाब दिया था।

आज मंगलू साइकिल पर शहर मज़दूरी करने जा रहा था, अभी वह गरबचन सिंह के यहाँ ही मज़दूरी पर जाता था, वैसे अब उनका तीन मंज़िला मकान भी बन चुका था चन्द दिनों का काम और रह गया था, अब उसकी साइकिल शहर के भीड़ भाड़ वाले इलाक़े में दाखिल हो गई थी। हालांकि उसने एक हफ़्ता तक गाँव में साइकिल चलाने की प्रेक्टिस की थी, वह सुबह तड़के ही उठकर साइकिल चलाने लगता था, और उस सिलसिले में काफी गिरता पड़ता था, गाँव वाले जमा होकर उसका साइकिल का चलाना देखते थे, और फिर जब वह गिरता था तो खूब हंसते थे, किसी जलन या हसद में नहीं, कोई गिरता है तो हंसी आ ही जाती है,और कभी कभी तो गाँव वालों के साथ साथ उसकी बीवी भी हंसी में शरीक हो जाती थी गरज़ एक हफ़्ता में वह काफी तजुरबाकार साइकिल सवार हो गया था और उस वक़्त काभी होशयारी से साइकिल चला रहा था, आज वह आधा घंटा पहले सरदारजी के यहाँ पहुंच गया था, आज तो बहुत जल्दी आगये सरदार जी ने आँखे मलते हुये उससे पूछा, और फिर जैसे उन्हें साइकिल का ध्यान आ गया, अरे नई साइकिल क्या तुम ने खरीदी, जी

बाबू जी मंगलू ने खुश होकर कहा, बड़ा पैसा आ गया सरदार जी ने अपनी राय ज़ाहिर की।

मंगलू का सारा जिस्म पसीने से तर था, आज रोज़ से ज़्यादा ही गरमी और धूप में शिद्दत थी, तभी दोपहर के खाने का वक़्त हो गया, सारे मज़दूर और मिस्त्री छत से उतर कर नीचे आगये थे, सब ने अपने अपने खाने की पोटलियाँ संभाल ली थीं, मंगलू ने भी अपनी पोटली संभाली और खाने के लिये बेठने ही वाला था कि उसने सोचा ज़रा एक बार अपनी साइकिल को देख लें, कितनी देर से उस की प्यारी प्यारी साइकिल उस के नज़रों से दूर थी, वह नीचे सरदार जी के बरआमदे में आ गया जहाँ उस ने साइकिल रखी थी, और ये देख कर उस की पैरों के नीचे से ज़मीन निकल गई कि साइकिल वहाँ नहीं खड़ी थी, बाबूजी, मालिक, मालिक, मेरी साइकिल मेरी साइकिल वह चिल्लाने लगा था, सरदार जी घर के बाहर आ गये थे, उस का इस तरह चलाना उन्हे बुरा लगा, क्या बात है क्यो शोर मचा हरे हो, उन्होंने कड़क कर पूछा, मालिक मेरी साइकिल यहां नही है, मंगलू घिघया रहा था, अरे साइकिल कौन उठा ले गया, अब सरदार जी को भी तशवीश होई, मालिक हम कह रहे थे कि साइकिल अन्दर रख दें आपने ही नहीं रखने दी, मंगलू आवाज़ में अब गम के साथ गुस्सा भी झलक रहा था। सरदार जी को मंगलू का ये अंदाज़ पसंद नहीं आया, ताला भी लगाया था कि नहीं, हां बाबूजी लगाया था, मंगलू के आखों से अब आंसू झलकने लगे थे, अरे तो रोता क्यो है, रोने से साइकिल कहीं मिल जायेगी, जा इधर उधर पता कर और मंगलू सरदारजी के घर के बाहर सड़कों पर मेरी साइकिल की गर्दान करता हुआ हर एक दुकानदार, राहगीर, ठेलेवाले सब से अपनी साइकिल के बारे में पूछता रहा, उस की अजीब हालत हो रही थी, वोह बार बार अपने बाल नोचने लगता था, राहगीर को रोक रोक कर पूछ रहा था, भाई साहब, बाबूजी, मालिक आपने किसी को हमारी साइकिल ले जाते देखा, बिलकुल नई साइकिल थी, जाहिर है कि राहगीर क्या बता सकते थे किसी ने अफसोस ज़ाहिर किया किसी ने हमदर्दी जताई, और कोई हंसा भी, वह दो तीन घन्टे साइकिल के तलाश में भटकता रहा, उसका हलक सूखकर कांटा हो गया था, पास में नल भी लगा था, लेकिन उसे पानी पीने का होश नहीं था। खाने की पोटली भी उस भगदौड़ में कहीं गिर गई थी। वह अपनी साइकिल पाने के लिये तड़पता रहा लेकिन ज़ाहिर है इस तरह से कहीं साइकिल मिलती है। शाम को वह थका मांदा सरदारजी के घर वापस आ गया था, मालिक साइकिल कहीं नहीं मिली वह फिर रोने लगा था, सरदार जी ने उससे हमदर्दी जताई, घर के अन्दर चले गये। उसने सोचा वह सरदार जी से कहेगा कि वह उसे एक साइकिल दिलवा दें। उसके बदले वह उनकी इतने दिनों तक चाकरी करेगा कि जब तक साइकिल के दाम नहीं हो जाते, बल्कि उस से भी ज़्यादा दिन तक उन के यहाँ काम करेगा। सरदार जी भले आदमी हैं, उसको हमेशा रोज़ मज़दूरी दे देते थे कभी भी उस का पैसा नहीं रखा। वह ज़रूर उस की बात मान जायेंगे। वह किसी हाल में भी बगैर साइकिल घर नहीं जाना चाहता था। वह जानता था कि साइकिल की चोरी का किस्सा सुनकर उसकी बीवी का क्या हाल हो जायेगा, और उस की उस वक़्त की तड़प भी सिर्फ उसकी बीवी ही की वजह से थी, उसे कितना सदमा पहुंचेगा, एक बार भी वह बेचारी साइकिल पर नहीं बैठी थी, उस ने सोचा अभी

दुकानें खुली होंगी। और सरदार जी से रूपया लेकर साइकिल खरीदता हुआ गाँव वापस जायेगा। सरदार जी बाहर आगये थे। साइकिल की चोरी पर उन्होने फिर एक बार अफसोस ज़ाहिर किया था। फिर जेब में से पर्स निकाल कर उससे बोले थे, लो ये छः रूपये तुम्हारे आधे दिन की मजदूरी के, आखिर तुम ने आधे ही दिन तो काम किया था, जी उस की ज़बान लड़खड़ाई थी, वह कुछ भी नहीं कर सका। पथराई हुई आखों से उन्हें देखता रहा, फिर वहां से चल दिया, अब वह अपने गाँव की तरफ जा रहा था, बहुत बोझल, क़दमों से, जहाँ उस की बीवी उसका इन्तिज़ार कर रही होगी।

★★★